FLORENCE INTERNATIONAL SCHOOL
CLASS- IX
WORKSHEET NO: 7
HINDI

NAME: **DATE: 07/04/2020**

अपठित गद्यांश

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अन्तर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात अकारण ही दंडित कर दिया हो किंतु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किन्तु उसे वह नतमस्तक आनंदी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

(i) हमें अपने जीवन की रिक्तता कब छोटी लगने लगती है?
(क) दूसरे की छोटी रिक्तता देखकर (ख) दूसरों की बड़ी रिक्तता देखकर
(ग) अपनी किस्मत को सोचकर (घ) ईश्वर को याद करके।

(ii) मनुष्य अपने जीवन में अकस्मात अकारण दंडित होने का दोष किसे देता है?
(क) दूसरे मनुष्य को (ख) माता-पिता को
(ग) ईश्वर को (घ) इनमें से कोई नहीं।

(iii) लेखक ने पिछले महीने जो काया देखी थी उसे अभिशप्त क्यों कहा?
(क) उसकी सुंदरता देखकर (ख) अनजाने में शाप से ग्रस्त होने के कारण
(ग) वरदान पाने के कारण (घ) शारीरिक विकलांगता के कारण।

(iv) वह उस दंड को कैसे झेल रही थी?
(क) खुशी-खुशी (ख) दुखी होकर
(ग) ईश्वर को दोष देकर (घ) निष्प्राण मांसपिंड बनकर।

(v) 'अभिशप्त काया देखी'–में रेखांकित अंश है–
(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम
(ग) विशेषण (घ) क्रिया विशेषण।